रविवार 22 अगस्त, 2021

विषय — मन

स्वर्ण पाठ: दानिय्येल 12 : 3

"तब सिखाने वालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा की नाईं प्रकाशमान रहेंगे।"

उत्तरदायी अध्ययन: नीतिवचन 9: 9, 10
सभोपदेशक 9: 13-15
नीतिवचन 3: 13, 17

9 बुद्धिमान को शिक्षा दे, वह अधिक बुद्धिमान होगा; धर्मी को चिता दे, वह अपनी विद्या बढ़ाएगा।
10 यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है, और परमपवित्र ईश्वर को जानना ही समझ है।
13 मैं ने सूर्य के नीचे इस प्रकार की बुद्धि की बात भी देखी है, जो मुझे बड़ी जान पड़ी।
14 एक छोटा सा नगर था, जिस में थोड़े ही लोग थे; और किसी बड़े राजा ने उस पर चढ़ाई कर के उसे घेर लिया, और उसके विरुद्ध बड़े बड़े धुस बनवाए।
15 परन्तु उस में एक दरिद्र बुद्धिमान पुरूष पाया गया, और उसने उस नगर को अपनी बुद्धि के द्वारा बचाया।
13 क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि पाए, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करे,
17 उसके मार्ग मनभाऊ हैं, और उसके सब मार्ग कुशल के हैं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. नीतिवचन 3 : 5-8

5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
6 उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।
7 अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना।
8 ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियां पुष्ट रहेंगी।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. अय्यूब 22 : 21, 22

21 उस से मेलमिलाप कर तब तुझे शान्ति मिलेगी; और इस से तेरी भलाई होगी।
22 उसके मुंह से शिक्षा सुन ले, और उसके वचन अपने मन में रख।

3. अय्यूब 23 : 10 (वह जानता है), 14

10 परन्तु वह जानता है, कि मैं कैसी चाल चला हूँ; और जब वह मुझे ता लेगा तब मैं सोने के समान निकलूंगा।
14 जो कुछ मेरे लिये उसने ठाना है, उसी को वह पूरा करता है; और उसके मन में ऐसी ऐसी बहुत सी बातें हैं।

4. दानिय्येल 2 : 1, 2, 4, 5 (*से 4th* ,), 6 (*से* :), 10 (*से* :), 12 (*से* ,), 16, 19, 23, 27 (*से 2nd* ,), 28 (वहां) (*से* .), 46 (*से* राजा), 47 (जवाब), 48

1 अपने राज्य के दूसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा जिस से उसका मन बहुत ही व्याकुल हो गया और उसको नींद न आई।
2 तब राजा ने आज्ञा दी, कि ज्योतिषी, तन्त्री, टोनहे और कसदी बुलाए जाएं कि वे राजा को उसका स्वप्न बताएं; सो वे आए और राजा के साम्हने हाजिर हुए।
4 कसदियों ने, राजा से अरामी भाषा में कहा, हे राजा, तू चिरंजीव रहे! अपने दासों को स्वप्न बता, और हम उसका फल बताएंगे।
5 राजा ने कसदियों को उत्तर दिया, मैं यह आज्ञा दे चुका हूं कि यदि तुम फल समेत स्वप्न को न बताओगे तो तुम टुकड़े टुकड़े किए जाओगे।
6 और यदि तुम फल समेत स्वप्न को बता दो तो मुझ से भांति भांति के दान और भारी प्रतिष्ठा पाओगे।
10 कसदियों ने राजा से कहा, पृथ्वी भर में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो राजा के मन की बात बता सके।
12 इस पर राजा ने झुंझलाकर, और बहुत की क्रोधित हो कर।
16 और दानिय्येल ने भीतर जा कर राजा से बिनती की, कि उसके लिये कोई समय ठहराया जाए, तो वह महाराज को स्वप्न का फल बता देगा।
19 तब वह भेद दानिय्येल को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रगट किया गया। सो दानिय्येल ने स्वर्ग के परमेश्वर का यह कह कर धन्यवाद किया,
23 हे मेरे पूर्वजों के परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद और स्तुति करता हूं, क्योंकि तू ने मुझे बुद्धि और शक्ति दी है, और जिस भेद का खुलना हम लोगों न तुझ से मांगे था, उसे तू ने मुझ पर प्रगट किया है, तू ने हम को राजा की बात बताई है।
27 दानिय्येल ने राजा का उत्तर दिया,
28 ... भेदों का प्रगटकर्त्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को जताया है कि अन्त के दिनों में क्या क्या होने वाला है।
46 फिर राजा ने...।

47 ... दानिय्येल से कहा, सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा
और भेदों का खोलने वाला है, इसलिये तू यह भेद प्रगट कर पाया।
48 तब राजा ने दानिय्येल का पद बड़ा किया, और उसको बहुत से बड़े बड़े दान दिए; और यह आज्ञा दी कि
वह बाबुल के सारे प्रान्त पर हाकिम और बाबुल के सब पण्डितों पर मुख्य प्रधान बने।

5. यशायाह 50 : 4, 7, 10

4 प्रभु यहोवा ने मुझे सीखने वालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूं।
भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं।
7 क्योंकि प्रभु यहोवा मेरी सहायता करता है, इस कारण मैं ने संकोच नहीं किया; वरन अपना माथा चकमक
की नाईं कड़ा किया।
10 तुम में से कौन है जो यहोवा का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, जो अन्धियारे में चलता हो
और उसके पास ज्योति न हो? वह यहोवा के नाम का भरोसा रखे, और अपने परमेश्वर पर आशा लगाए
रहे।

6. मत्ती 4 : 23

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार
करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।

7. मत्ती 5 : 1, 2

1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

8. मत्ती 25 : 1-13

1 तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को
निकलीं।
2 उन में पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं।
3 मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया।
4 परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया।
5 जब दुल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं, और सो गई।
6 आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है, उस से भेंट करने के लिये चलो।
7 तब वे सब कुंवारियां उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं।
8 और मूर्खों ने समझदारों से कहा, अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं।
9 परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया कि कदाचित हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो; भला तो यह है, कि तुम
बेचने वालों के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।

10 जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चलीं गई और द्वार बन्द किया गया।
11 इसके बाद वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं, हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे।
12 उस ने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता।
13 इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को॥

9. कुलुस्सियों 1 : 9-13

9 इसी लिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और बिनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ।
10 ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहिचान में बढ़ते जाओ।
11 और उस की महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ, यहां तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको।
12 और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में समभागी हों।
13 उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 373 : 15-16 (*से*,)

"यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है।"

2. 275 : 10-24

वास्तविकता और उसके विज्ञान में होने के क्रम को समझने के लिए, आपको परमेश्वर को उस सभी के दिव्य सिद्धांत के रूप में फिर से शुरू करना चाहिए जो वास्तव में है। आत्मा, जीवन, सत्य, प्रेम, एक के रूप में गठबंधन, - और भगवान के लिए शास्त्र के नाम हैं। सभी पदार्थ, बुद्धि, ज्ञान, अस्तित्व, अमरता, कारण और प्रभाव ईश्वर के हैं। ये उनकी विशेषताएं हैं, अनंत दिव्य सिद्धांत, प्रेम की शाश्वत अभिव्यक्तियाँ। कोई भी ज्ञान बुद्धिमान नहीं है, लेकिन उसका ज्ञान है; कोई सत्य सत्य नहीं है, कोई प्रेम प्यारा नहीं है, कोई जीवन जीवन नहीं है, लेकिन परमात्मा है; कोई अच्छा नहीं है, लेकिन अच्छा भगवान सबसे अच्छा है।

दिव्य तत्वमीमांसा, जैसा कि आध्यात्मिक समझ से पता चलता है, स्पष्ट रूप से दिखाता है कि सभी मन है, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, - अर्थात्, सभी शक्ति, सभी उपस्थिति, सभी विज्ञान। इसलिए सभी वास्तव में मन की अभिव्यक्ति है।

3. 246 : 23-26

अमर मन द्वारा शासित मनुष्य हमेशा सुंदर और भव्य होता है। प्रत्येक सफल वर्ष ज्ञान, सौंदर्य और पवित्रता को प्रकट करता है।

4. 283 : 4-12

मन सभी आंदोलन का स्रोत है, और इसकी स्थायी और सामंजस्यपूर्ण कार्रवाई की मंदता या जांच करने के लिए कोई जड़ता नहीं है। माइंड "कल, और आज, और हमेशा" जीवन, प्रेम और ज्ञान की तरह ही है। पदार्थ और उसके प्रभाव - पाप, बीमारी और मृत्यु - नश्वर मन की अवस्थाएँ हैं जो कार्य करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, और फिर एक पड़ाव पर आते हैं। वे मन के तथ्य नहीं हैं। वे विचार नहीं हैं, बल्कि भ्रम हैं। सिद्धांत निरपेक्ष है। यह किसी भी त्रुटि से स्वीकार नहीं किया जाता है, लेकिन समझने पर निश्चित रहता है।

5. 89 : 18-24

जरूरी नहीं कि मन शैक्षिक प्रक्रियाओं पर निर्भर हो। यह अपने आप में सभी सुंदरता और कविता, और उन्हें व्यक्त करने की शक्ति रखता है। आत्मा, ईश्वर, तब सुनाई देता है जब इंद्रियाँ चुप हो जाती हैं। हम जितना करते हैं उससे कहीं अधिक हम सभी सक्षम हैं। आत्मा का प्रभाव या क्रिया एक स्वतंत्रता प्रदान करती है, जो कि अविवेक की घटनाओं और असभ्य होंठों के उत्साह की व्याख्या करती है।

6. 84 : 3-23, 28-9

प्राचीन पैगंबरों ने आध्यात्मिक दृष्टि से अपनी दूरदर्शिता हासिल की, दृष्टिकोण को शामिल किया, न कि बुराई और गलत तथ्य को दूर करने से दूर किया, — भविष्य की निष्ठा और मानवीय विश्वास के आधार पर भविष्य की भविष्यवाणी करना। जब विज्ञान में पर्याप्त रूप से उन्नत होने की सच्चाई के साथ सामंजस्य स्थापित किया जाता है, तो पुरुष अनैच्छिक रूप से द्रष्टा और भविष्यद्वक्ता बन जाते हैं, जो राक्षसों, आत्माओं, या लोकतंत्रों द्वारा नियंत्रित नहीं होते हैं, लेकिन एक आत्मा द्वारा। यह वर्तमान, दिव्य मन का विचार है, और विचार का जो इस मन के साथ संबंध में है, अतीत, वर्तमान और भविष्य को जानने के लिए।

साइंस के साथ परिचित होना हमें बड़े पैमाने पर दिव्य मन के साथ कम्यून को सक्षम बनाता है, सर्वकल्याण की चिंता करने वाली घटनाओं का पूर्वाभास और पूर्वाभास, दैवीय रूप से प्रेरित करने के लिए, — हाँ, भ्रूणहीन मन की सीमा तक पहुँचने के लिए।

यह समझना कि माइंड असीम है, कॉरपोरलिटी से घिरा नहीं है, ध्वनि या दृष्टि के लिए कान और आंख पर निर्भर नहीं है और न ही यह मांसपेशियों और हड्डियों पर निर्भर करता है, माइंड-साइंस की ओर एक कदम है जिसके द्वारा हम मनुष्य के स्वभाव और अस्तित्व की व्याख्या करते हैं।

आत्मा के बारे में हम सभी सही रूप से जानते हैं कि ईश्वर, ईश्वरीय सिद्धांत से आता है, और यह मसीह और ईसाई विज्ञान के माध्यम से सीखा जाता है। यदि इस विज्ञान को अच्छी तरह से सीखा और ठीक से पचा लिया गया है, तो हम सत्य को अधिक सटीक रूप से जान सकते हैं कि खगोलशास्त्री तारों को पढ़ सकते हैं या किसी ग्रहण की गणना कर सकते हैं।

यह माइंड-रीडिंग क्लैरवॉयन्स के विपरीत है। यह आध्यात्मिक समझ की रोशनी है जो आत्मा की क्षमता को प्रदर्शित करती है, भौतिक अर्थ की नहीं। यह आत्मा-बोध मानव मन में तब आता है जब उत्तरार्द्ध दिव्य मन को उपजता है।

इस तरह के अंतर्ज्ञान से पता चलता है कि जो कुछ भी बनता है और सद्भाव को बनाए रखता है, एक को अच्छा करने में सक्षम बनाता है, लेकिन बुराई को नहीं।

7. 85 : 15-18

यह दर्ज किया गया है कि यीशु, जब वह एक बार अपने छात्रों के साथ यात्रा कर रहा था, "उनके विचारों को जानता था," - उन्हें वैज्ञानिक रूप से पढ़ें। उसी प्रकार उसने रोग को पहचाना और रोगियों को चंगा किया।

8. 98 : 4-8

आज के भविष्यवक्ता मानसिक क्षितिज में इन समयों के संकेतों को देखते हैं, ईसाई धर्म का पुन: प्रकट होना जो बीमारों को ठीक करता है और त्रुटि को नष्ट करता है, और कोई अन्य संकेत नहीं दिया जाएगा। मन के बिना शरीर को बचाया नहीं जा सकता।

9. 378 : 3-10, 22-32

रोग की कोई बुद्धि नहीं है। अनजाने में आप खुद को भुगतने की सजा देते हैं। इसे समझने से आप इस स्व-वाक्य को बदल सकेंगे, और हर परिस्थिति का सच्चाई से सामना कर सकेंगे। रोग मन से कम है, और मन इसे नियंत्रित कर सकता है।

तथाकथित मानव मन के बिना, तंत्र की कोई भड़काऊ या तीखी कार्रवाई नहीं हो सकती है। त्रुटि को दूर करें, फिर आप इसके प्रभावों को नष्ट कर देते हैं।

रोग मन के साम्राज्य पर विवाद करने या मन को सिंहासन से हटाने और सरकार को अपने हाथों में लेने की बुद्धि नहीं है। बीमारी न तो ईश्वर प्रदत्त है, न ही एक स्व-निर्मित भौतिक शक्ति है, जो सूक्ष्मता से मन का मुकाबला करती है और अंत में उस पर विजय प्राप्त करती है। भगवान ने कभी भी जीवन को निष्क्रिय करने या कलह की लंबी और ठंडी रात के साथ सामंजस्य बिठाने की शक्ति के साथ संपन्न नहीं किया। ऐसी शक्ति, दैवीय अनुमति के बिना, अकल्पनीय है; और यदि ऐसी शक्ति को दैवीय रूप से निर्देशित किया जा सकता है, तो यह कम बुद्धि को प्रकट करेगी जो हम आमतौर पर मानव सरकारों में प्रदर्शित करते हैं।

10. 379 : 6-8

संसार का वास्तविक क्षेत्राधिकार मन में है, प्रत्येक प्रभाव को नियंत्रित करता है और सभी कार्य को दिव्य मन में निहित माना जाता है।

11. 492 : 7-21 (*से 2nd* .), 25-28

पवित्र होना, समरसता, अमरता है। यह पहले से ही साबित हो गया है कि इस का ज्ञान, यहां तक कि छोटी सी डिग्री में, नश्वर लोगों के भौतिक और नैतिक स्तर को ऊपर उठाएगा, दीर्घायु को बढ़ाएगा, चरित्र को शुद्ध और ऊंचा करेगा। इस प्रकार प्रगति अंततः सभी त्रुटि को नष्ट कर देगी, और अमरता को प्रकाश में लाएगी। हम जानते हैं कि एक कथन जो अच्छा साबित होता है वह सही होना चाहिए। नए विचार लगातार मंजिल प्राप्त कर रहे हैं। ये दो विरोधाभासी सिद्धांत, कि सामग्री कुछ है, या यह सब मन है, वे जमीन विवाद करेंगे, जब तक किसी को विजेता नहीं माना जाता। अपने अभियान पर चर्चा करते हुए, जनरल ग्रांट ने कहा: यदि यह सभी गर्मियों के मौसम में होता है, तो मैं इसे इस लाइन पर लड़ने का प्रस्ताव देता हूं। विज्ञान कहता है: सब मन और मन का विचार है। आप इसे इस लाइन पर लड़ना होगा। सामग्री आपको कोई सहायता नहीं दे सकती।

ईश्वर मन है और ईश्वर अनंत है; इसलिए सब मन है। इस कथन पर विज्ञान के होने का पता लगाया जाता है, और इस विज्ञान का सिद्धांत ईश्वरीय है, जिसमें सामंजस्य और अमरता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने,

परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6